8 मार्च अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष....

हर नारी का हो सम्मान

भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है । संस्कृत में एक श्लोक है - 'यस्य पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवताः । अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते है । किन्तु वर्तमान में जो हालात दिखाई देते हैं, उसमें नारी का हर जगह अपमान होता चला जा रहा है । उसे 'भोग की वस्तु' समझकर आदमी 'अपने तरीके' से इस्तेमाल कर रहा है । यह बेहद चिंताजनक बात है लेकिन हमारी संस्कृति को बनाए रखते हुए नारी का सम्मान कैसे किया जाये, इस पर विचार करना आवश्यक है ।

माता का हमेशा सम्मान हो - मां अर्थात् माता के रुप में नारी, धरती पर अपने सबसे पवित्रतम रुप में है । माता यानी जननी । मां को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है , क्योंकि ईश्वर की जन्मदात्री भी नारी ही है । माँ त्रिशला तथा वामादेवी के संदर्भ में हम देख सकते हैं इसे । किन्तु बदलते समय के हिसाब से संतानों ने अपनी मां को महत्व देना कम कर दिया है । यह चिंताजनक पहलू है । सब धन लिप्सा व अपने स्वार्थ में डूबते जा रहे हैं परन्तु जन्म देने वाली माता के रूप में नारी का सम्मान अनिवार्य रूप से होना चाहिए, जो वर्तमान में कम हो गया है, यह सवाल आजकल यक्षप्रश्न की तरह चहुंओर पांव पसारता जा रहा है । इस बारे में वर्तमान व नई पीढ़ी को आत्मावलोकन करना चाहिए ।

बाजी मार रही हैं लड़कियां - आज कल की लड़कियों पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि ये लड़कियां आजकल सभी क्षेत्रों में बाजी मार हर क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए देखा जा सकता है । विभिन्न परीक्षाओं की मेरिट लिस्ट में लड़कियां तेजी से आगे बढ़ रही हैं । इन्होंने अपनी मेहनत और मेधा शक्ति के बल पर ही हर क्षेत्र में प्रवीणता अर्जित कर ली है । इनकी इस प्रतिभा का सम्मान किया जाना चाहिए ।

कंधे से कंधा मिलाकर चलती नारी - नारी का सारा जीवन पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने में ही बीत जाता है । पहले पिता की छत्रछाया में उसका बचपन बीतता है । पिता के घर में भी उसे घर का कामकाज करना होता है, साथ ही अपनी पढ़ाई भी जारी रखनी होती है । उसका यह क्रम विवाह तक जारी रहता है । उसे इस दौरान घर के कामकाज के साथ पढ़ाई लिखाई की दोहरी जिम्मेदारी निभानी होती है जबकि इस दौरान लड़कों को पढ़ाई लिखाई के अलावा और कोई काम नहीं रहता है । कुछ नवयुवक तो ठीक से पढ़ाई भी नहीं कर पाते । इस नजरिए से देखा जाए तो नारी सदैव पुरुष से भी अधिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करती है ।

विवाह पश्चात तो महिलाओं पर और भी अधिक जिम्मेदारियों आ जाती है । पति, सास-ससुर, देवर-ननद की सेवा के पश्चात उनके पास अपने लिए समय ही नहीं बचता है । संतान के जन्म के बाद तो उनकी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है । घर-परिवार, चौके-चूल्हे में ही एक आम महिला का जीवन कब बीत जाता है, पता ही नहीं चलता । कई बार वे अपने अरमानों को घर परिवार की खातिर भूल जाती है। उन्हें इतना समय ही नहीं मिल पाता है कि वे अपने लिए भी जिए । परिवार की खातिर अपनी इच्छाओं को छोड़ने में भारतीय महिलाएं सबसे आगे हैं । परिवार के प्रति उनका यही त्याग उन्हें सम्मान का अधिकारी बनाता है ।

बच्चों में संस्कार डालना - बच्चों में संस्कार भरने का काम मां के रुप में नारी द्वारा ही किया जाता है । बच्चों की प्रथम गुरु मां ही होती है । मां के व्यक्तित्व कृतित्व का असर बच्चों पर पड़ता है । इतिहास उठाकर देखे तो मां जीजाबाई ने शिवाजी महाराज में श्रेष्ठ संस्कारों का बीजारोपण किया था । जिसका ही परिणाम है कि शिवाजी महाराज को हम आज भी उनके श्रेष्ठ कर्मों के कारण आज भी जानते है । बेहतर संस्कार देकर बच्चे को समाज में उदाहरण बनाना, नारी ही कर सकती है ।

अद्रभता की पराकाष्ठा - आजकल महिलाओं के साथ अभद्रता की पराकाष्ठा हो रही है । हम रोज ही अखबारों और न्यूज चैनलों में महिलाओं के साथ छेड़छाड़ या अभद्र व्यवहार की कई घटनायें पढ़ते व देखते है । इसे नैतिक पतन ही कहा जाएगा । शायद ही कोई दिन आता हो, जब महिलाओं के साथ अभद्रता पर समाचार सुनने को ना मिले । नारी के सम्मान और उसकी अस्मिता की रक्षा के लिए इस पर विचार व रक्षा करना बेहद जरुरी है । हम सबकी नैतिक जवाबदारी है कि यदि उन्हें किसी भी तरह से प्रताड़ित किया जा रहा है तो न्यायसंगत सुविधायें निशुल्क प्रदान की जाना चाहिए ।

आप भी बन सकती है हमारी संवाददाता -

आप लेखन या सामाजिक/धार्मिक कार्यों में रुचि रखती है, तो अपने नगर में हो रहे कार्यक्रमों का सचित्र समाचार हमारे वाट्सएप्प नंबर 9406744064 पर भेज कर गोलालारीय दर्शन पत्रिका में संवाददाता की भूमिका निभा सकती है । लेखन में रुचि रखने वाली महिलाओं के लेखों को हम सचित्र सादर आमंत्रित करते है ।

अशालीन वस्त्र भी एक कारण - कतिपय 'आधुनिक' महिलाओं का पहनावा भी शालीन नहीं हुआ करता है । इन वस्त्रों के कारण भी यौन अपराध बढ़ते जा रहे हैं । इन महिलाओं का सोचना कुछ अलंग ढ़ंग का हुआ करता हैं । वे सोचती हैं कि हम आधुनिक है । यह विचार उचित नहीं कहा जा सकता हैं । अपराध होने पर यह बात उभर कर सामने नहीं आ पाती है कि उनके वस्त्रों के कारण भी यह अपराध प्रेरित हुआ है । कामकाजी महिलाओं को विशेष रुप से अपने वस्त्रों का चयन सावधानीपूर्वक करना चाहिए जिससे वे सहकर्मियों व समाज के बीच अभद्र व गलत सोच विकसित न हो पाये ।

देवी अहिल्याबाई होलकर, मदर टेरेसा, इला भट्ट, महादेवी वर्मा, राजकुमारी अमृत कौर, सुचेता कृपलानी और कस्तूरबा गांधी आदि जैसी कुछ प्रसिद्ध महिलाओं ने अपने मन-वचन व कर्म से सारे जग-संसार में अपना नाम रोशन किया है । इंदिरा गांधी ने अपने दृढ़ संकल्प के बल पर भारत व विश्व राजनीति को प्रभावित किया है । उन्हें लौह-महिला यूं ही नहीं कहा जाता है । दृढ़ चट्टान की तरह वे अपने कर्मक्षेत्र में कार्यरत रहीं ।

हम हर महिला का सम्मान करें । अवहेलना, भ्रूण हत्या और नारी की अहमियत न समझने का परिणाम स्वरुप महिलाओं की संख्या, पुरुषों के मुकाबले आधी भी नहीं बची है । इंसान को यह नहीं भूलना चाहिए, कि नारी द्वारा जन्म दिए जाने पर ही वह दुनिया के अस्तित्व बना पाया है और यहां तक पहुंचा है । उसे ठुकराना या अपमान करना सही नहीं है । भारतीय संस्कृति में महिलाओं को सरस्वती देवी, दुर्गा व लक्ष्मी आदि का यथोचित सम्मान दिया गया है अत: उन्हें उचित सम्मान दिया ही जाना चाहिए ।

*** अर्चना जैन, तिलक नगर, इन्दौर**

* पत्रिका के आर्थिक सहयोग के लिए सादर आभार *

विशेष सहयोगी 2100/-

श्री प्रदीपकुमार जैन, मणीनगर, अहमदाबाद

श्री मुन्नालाल जैन, पिपरा, ललितपुर

हीरक जन्मदिवस की हार्दिक बधाईयां

श्री खुशालचंदजी जैन का 75वां जन्मदिवस सादगीपूर्ण तरीके से परिजनों व इष्टमित्रों के साथ मनाया गया । आपने सेवानिवृत्ति पश्चात समाजकार्यों में विशेष रुचि रखते हुए गोलालारीय समाज न्यास के अध्यक्ष के रुप में कार्य संभालते हुए समाज कार्यों को गति प्रदान की । आपके मार्गदर्शन में समाज की समस्त संस्थाएँ प्रगति पथ पर अग्रसर है । समाज में आपके विशेष योगदान व रुचि को ध्यान रख न्यास द्वारा आपको आजीवन ट्रस्टी व गोलालारीय दर्शन में प्रबंध संपादक के रुप में मनोनीत किया गया है । हम आशा करते है आप स्वस्थ व दीर्घायु रहकर समाज को निरंतर मार्गदर्शन प्रदान करते रहेंगे । ''गोलालारीय दर्शन'' परिवार की ओर से मंगलमयी बधाईयाँ ।

गोलालारीय दर्शन परिवार वाट्सएप्प पर हर शहर का एक सामाजिक ग्रुप बनाना चाहता है, जिसमें वहां की सामाजिक गतिविधियां, धार्मिक कार्यक्रम व शोक संदेशों का प्रचार प्रसार तत्काल किया जा सके । इस माध्यम से हम राष्ट्रीय स्तर पर संपूर्ण गोलालारीय समाज को जोड़ने का प्रयास कर रहे है । **इस ग्रुप में हमारा प्रयास रहेगा कि श्रीजी, आचार्यश्री व मुनिराजों के चित्र व अनावश्यक संदेशों को नहीं भेजे ।** यह संचार सेवा समाज सदस्यों के लिए उपयोगी सिद्ध हो ऐसी जानकारी इसमें पोस्ट की जावे । आप यदि इससे सहमत है तो अपनी स्वीकृति में अपना नाम, शहर का नाम के साथ 9406744064, 9407453066 पर भेज देवें ।

मार्च का महीना अर्थात बच्चों और माता पिता की परीक्षाओं का समय है विशेष रुप से माताओं की भूमिका अहम रहती है । गहन अध्ययन और कठोर परिश्रम से आप सभी उच्चांक प्राप्त करें । इसके लिए गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ । परीक्षा परिणाम आने के पश्चात आपको एक और जिम्मेदारी पूर्ण करना है । अपनी अंकसूची की फोटोकॉपी और अपना पासपोर्ट फोटोग्राफ हम तक अवश्य भेजें ताकि आगामी जुलाई अंक में प्रकाशित होने वाले प्रतिभाशली छात्र छात्राओं में आपका नाम जुड़ सके । आगामी अंक में आवेदन पत्र प्रकाशित होगा, जिसे पूर्ण एवं स्वच्छ रुप भरकर समय पर हमारे कार्यालय में भेजना न भूले ।